इकाई

1

प्लेटो (Plato)

संरचना (Structure)

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3. प्लेटो : रिपब्लिक

1.4. प्लेटो का आदर्श राज्य

1.5. प्लेटो का न्याय सम्बन्धी सिद्धान्त

- **सारांश :**
- **अभ्यास प्रश्न**
- **सन्दर्भ पुस्तकें**

1.1. उद्देश्य

विधार्थी इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् योग्य होंगे —

- प्लेटो के रिपब्लिक (Republic) की अवधारणा को समझने में;
- प्लेटो के आदर्श राज्य एवं न्याय संबंधी सिद्धांत को समझने में;

1.2 प्रस्तावना

प्लेटो ने अपने जीवन में यूनान के इतिहास का एक अत्यन्त नाजुक दौर देखा था। उसने अपनी आँखों से एथेन्स को स्पार्टा के सामने घुटने टेकते हुए देखा, उसने अपने प्रिय गुरू और अपनी दृष्टि में श्रेष्ठतम मानव सुकरात को विष का प्याला पीते देखा; उसने एथेन्स में 'तीस आतताइयों' (Thirty Tyrants) का और नैतिक आदर्शों का पराभव देखा और उसने सार्वजनिक क्षेत्र की इन बुराइयों को दूर करने का निश्चय किया। उसे समस्या का समाधान मिला –'दार्शनिक राजा' की धारणा में और उसने इस बात का प्रतिपादन किया कि शासन का कार्य एक विशेष कला होने के कारण सर्वाधिक बुद्धिमान व्यक्तियों के द्वारा ही (शासन कार्य) किया जाना चाहिए। जैसा कि शैली (Shelley) कहता है, ''वह प्रथम और सम्भवत: अन्तिम व्यक्ति था, जिसने इस बात का प्रतिपादन किया कि राज्य पर सर्वाधिक धनवान, सर्वाधिक महत्वाकांक्षी या सर्वाधिक चालाक व्यक्तियों द्वारा नहीं, वरन् सर्वाधिक बुद्धिमान व्यक्तियों द्वारा शासन किया जाना चाहिए।''

इसी प्रकार उसका यह आग्रह करना कि ''राजनीतिक अधिकार तथा आर्थिक शक्ति में पृथक्करण होना चाहिए'' एक ऐसा सिद्धान्त है जिसे भुलाकर आज का विश्व राजनीतिज्ञों एवं प्रशासकों के भ्रष्टाचार से पीड़ित है। **प्लेटो** का यह विश्वास है कि 'शासन सत्ता केवल उन लोगों के हाथ में होनी चाहिए जो आर्थिक स्वार्थों से

निलिप्त तथा इहलौकिक आकर्षणों से परे हों'—वह अमर सन्देश है जो आज भी उतना ही सत्य है जितना कि **प्लेटो** युगीन यूनान में था।

प्लेटो की रचनाएँ (Works of Plato)

प्लेटो द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या लगभग 36 या 38 मानी जाती है, किन्तु इनमें से प्रामाणिक ग्रन्थ केवल 28 हैं। उसके सभी प्रामाणिक ग्रन्थों का **बर्नेट** द्वारा सम्पादित यूनानी संस्करण 2,662 पृष्ठों (ऑक्सफोर्ड द्वारा प्रकाशित) में प्रकाशित हुआ है। इनमें से कुछ प्रमुख ग्रन्थों के नाम इस प्रकार हैं —

1. अपॉलाजी (Apology) 2. क्रीटो (Crito), 3. यूथीफ्रो (Euthyphro), 4. जोर्जियस (Gorgias), 5. मीनो (Meno), 6. प्रोटागोरस (Protagoras), 7. सिंपोजियम (Symposium), 8. फेडो (Phaedo), 9. रिपब्लिक (Republic), 10. सोफिस्ट (Sophiest), 11. स्टेट्समैन (Statesman), 12. लॉज (Laws)।

प्लेटो के चिन्तन की पद्धति (Plato's Style and Method)

प्लेटो ने अपने चिन्तन में बहुत-सी पद्धतियों का प्रयोग किया है। वस्तुत: प्लेटो के दर्शन में हमें द्वन्द्वात्मक, विश्लेषणात्मक, सोद्देश्यात्मक, निगमनात्मक, सादृश्यात्मक तथा ऐतिहासिक आदि सभी पद्धतियों के प्रयोग का आभास मिलता है।

प्लेटो के सभी ग्रन्थ प्रश्नोत्तर रूप में, संवाद या वार्तालाप की शैली में लिखे होने के कारण उन्हें संवाद कहा जाता है। संवाद या द्वन्द्वात्मक पद्धति चिन्तन की वह प्रणाली है जिसके द्वारा प्रश्नोत्तर एवं तर्क-वितर्क के आधार पर किसी सत्य का अन्वेषण किया जाता है। इस पद्धति के द्वारा मस्तिष्क के विचारों को उत्तेजित कर उन्हें सत्योन्मुख करने का प्रयास किया जाता है। **प्लेटो** ने द्वन्द्वात्मक या संवाद **शैली** को अपने गुरू **सुकरात** से ग्रहण किया था। **सुकरात** ने अपना समस्त जीवन संवाद या वार्तालाप में ही व्यतीत किया। उसके इस शैली को अपनाये जाने का मुख्य उद्देश्य ज्ञान प्रदान करना नहीं था जितना कि अपने पाठकों को विचारशील बनाना था।

प्लेटो ने अपनी इस द्वन्द्वात्मक पद्धति का प्रयोग तीन उद्देश्यों से किया है— प्रथम, सत्य के अन्वेषण हेतु; द्वितीय, सत्य की अभिव्यक्ति और प्रचार हेतु और तृतीय, सत्य की परिभाषा हेतु।

प्लेटो की द्वन्द्वात्मक पद्धति की आलोचना भी की गयी हैं। आलोचकों के अनुसार, इसमें उत्तर से अधिक प्रश्नों पर जोर दिया जाता है और जितने उत्तर नहीं दिये जाते उससे अधिक प्रश्न पूछे जाते हैं। फलस्वरूप इस पद्धति से मस्तिष्क स्पष्ट होने के बदले भ्रान्त हो जाता है। अत्यधिक तर्क-वितर्क से शंकाओं का समाधान नहीं अपितु उनकी वृद्धि होती है और फलस्वरूप विकास की गति अवरूद्ध हो जाती है।

प्लेटो ने **निगमनात्मक (Deductive)** विधि का प्रयोग भी किया है जिसे दार्शनिक पद्धति भी कहते हैं। इस विधि में दार्शनिक कुछ सिद्धान्तों को प्रथम अथवा आधारभूत मानता है। वे एक प्रकार के सामान्य सिद्धान्त होते हैं, जिनसे कुछ विशिष्ट निष्कर्ष निकाले जाते हैं। इसी कारण इस पद्धति को सामान्य से विशिष्ट (From general to the particular) की ओर चलने वाली पद्धति भी कहते हैं। **प्लेटो** ने सुशासन और अच्छे शासन के लिए कुछ सिद्धान्तों को आधार रूप में स्वीकार किया है और उनके आधार पर उसने रिपब्लिक में आदर्श-राज्य का चित्रण किया है।

1.3. प्लेटो : रिपब्लिक

'**रिपब्लिक**' **प्लेटो** की महानतम और सर्वश्रेष्ठ कृति है। इसे **प्लेटो** ने 40 वर्ष की अवस्था में अपने विचार परिपक्व और प्रौढ़ होने पर लिखा था। **शैली** और विषय-विविधता की दृष्टि से ये उसका अनुपम ग्रन्थ

है। आकार की दृष्टि से '**रिपब्लिक**' प्लेटो के अन्य सब ग्रन्थों से बड़ा होते हुए 'लॉज' (Laws) से छोटा है, किन्तु महत्व की दृष्टि से उससे बढ़ा-चढ़ा है।

रिपब्लिक का स्वरूप

रिपब्लिक केवल राजनीतिक व्यवस्था का ही चित्रण नहीं है। यह महाभारत की भाँति **प्लेटो** के विचारों का विश्वकोश है। इसमें नीतिशास्त्र, आचार शास्त्र, अध्यात्मशास्त्र आदि विविध विषयों का वर्णन है। रिपब्लिक का आरम्भ आचारशास्त्र और नैतिक दर्शन की समस्याओं से होता है। इसके आरम्भ में ही यह प्रश्न उठाया गया है कि न्याय है, इस ग्रन्थ का दूसरा नाम **दिकायेग्रस पोलितिकास** अर्थात् 'राजनीतिक न्याय विषयक' है। अत: न्याय का एवं मानवीय आत्मा के नैतिक गुणों का विवेचन करने से यह आचारशास्त्र का ग्रन्थ है। नैतिक गुणों का विकास शिक्षा से सम्भव है, उत्तम शासन के लिए शासकों की शिक्षा की व्यवस्था आवश्यक है। अत: इसमें शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं का विशद् वर्णन है। इसको दृष्टि में रखते हुए फ्रेंच विचारक **रूसो** ने लिखा था — ''रिपब्लिक राजनीतिशास्त्र का ग्रन्थ नहीं हैं, किन्तु शिक्षा पर कभी भी लिखा गया सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है'' (The Republic is not a work upon politics, but the finest treatise on education that ever was written)। यह राजनीतिशास्त्र का भी ग्रन्थ है, क्योंकि इसमें विभिन्न शासन प्रणालियों का, राज्य के स्वरूप का तथा आदर्श शासन प्रणाली का वर्णन है। यह अध्यात्मशास्त्र (Metaphysics) का भी ग्रन्थ है क्योंकि इसमें विचारों के सिद्धान्त (Theory of ideas) तथा ज्ञान के यथार्थ स्वरूप का प्रतिपादन है। यह इतिहास के दर्शन (Philosophy of history) का भी ग्रन्थ है क्योंकि इसमें यह बताया गया है कि ऐतिहासिक परिवर्तन की प्रक्रिया से किस प्रकार आदर्श राज्य का अध:पतन निरंकुश शासन (Tyranny) में होता है। इस प्रकार इस एक ही ग्रन्थ में अनेक शास्त्रों और विषयों का वर्णन है, इसका मुख्य कारण यह है, कि उस समय तक यूनानियों ने ज्ञान का विभिन्न शास्त्रों में सुस्पष्ट वर्गीकरण नहीं किया था। **प्लेटो** के शिष्य **अरस्तू** ने यद्यपि सर्वप्रथम अध्यात्मशास्त्र, नीतिशास्त्र और राजनीतिशास्त्र का पृथक् ग्रन्थों में प्रतिपादन किया, किन्तु फिर भी वह राजनीतिशास्त्र और नैतिक दर्शन को अभिन्न समझता था।

रिपब्लिक में मानव जीवन की समस्याओं का समग्र चिन्तन करते हुए बड़े विविध और व्यापक विषयों पर विचार किया गया है। **विल ड्यूरैण्ट** के शब्दों में, ''इस ग्रन्थ में उसका (**प्लेटो**) अध्यात्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, मनोविज्ञान, शिक्षाशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, और कला का सिद्धान्त प्रतिपादित है। इसमें इम ऐसी आधुनिक समस्याएँ पाते हैं, जैसे साम्यवाद, समाजवाद, नारी स्वातन्त्रयवाद, गर्भनिराध, सुप्रजनन शास्त्र, नीट्शे द्वारा बतायी गयी नैतिकता और कुलीनतन्त्र की समस्याएँ, **रूसो** का प्राकृतिक दशा की और लौटने का सिद्धान्त तथा शिक्षा की समस्याएँ, विचारक का Elan Vital **फ्रायड** का मनोविश्लेषण यहाँ सभी कुछ है।''

बार्कर ने इसके सम्बन्ध में सत्य ही लिखा है — ''यह मानव के समग्र जीवन दर्शन (Complete philosophy of life) का प्रयास हैं। प्रधान रूप से क्रियाशील मानव (Man in action) या मनुष्य के कार्य इसका विषय है, अत: इसका सम्बन्ध नैतिक और राजनीतिक जीवन की समस्याओं से है, किन्तु मानव एक समष्टि है, उसके कार्य उसके विचारों को जाने बिना नहीं समझे जा सकते, अत: **रिपब्लिक** मनुष्य के विचारों का व उसके कानूनों का विवेचन करती है। इस दृष्टि से **रिपब्लिक** मनुष्य का पूर्ण जीवनदर्शन है।''

रिपब्लिक की रचना का उद्देश्य

प्लेटो ने अपने इस महान ग्रन्थ की रचना कुछ निश्चित व्यावहारिक उद्देश्यों की पूर्ति को लेकर की थी। वह इसके माध्यम से सोफिस्ट विचारों द्वारा प्रतिपादित आत्म तृप्ति के सिद्धान्त को गलत और झूठा सिद्ध करना चाहता था, जिसे भ्रष्टाचारी और जनतन्त्री दोनों प्रकार के राज्यों ने अपना लिया था। प्लेटो ने इस निरंकुश

व्यक्तिवाद का विरोध किया और उसके स्थान पर राज्य के जैविक रूप (Organic nature) का प्रतिपादन किया और यह बताया कि एक व्यक्ति के लिए न्याय अपने उस कर्तव्य का पालन करना है जिसके लिए उसे प्रशिक्षण देकर योग्य बनाया गया है तथा जिसकी पूर्ति से सम्पूर्ण समाज का हित साधन होता है। यह प्रतिपादित करना चाहता है कि राज्य और व्यक्ति के हित में कोई संघर्ष नहीं है तथा न्यायी एवं बुद्धिमान शासक वही है जो जनकल्याण के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने में ही आनन्द का अनुभव करता हो। संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि उसने उस हिंसात्मक व्यक्तिवादी प्रवृति के उन्मूलन का प्रयास किया जो उस समय की राजनीति पर बुरी तरह से हावी थी तथा जिससे प्रभावित होकर धनिकतन्त्रों में अमीर और जनतन्त्रों में गरीब वर्गों का शोषण कर रहे थे। **बार्कर** के अनुसार, ''प्लेटों के राज दर्शन का लक्ष्य एक ऐसे सुदृढ़ और निष्पक्ष शासन की स्थापना करना था जिसमें न तो अमीर, गरीब पर और न गरीब अमीर पर शासन कर सकें वरन् जो दोनों के ऊपर हों या कम से कम जिसमें दोनों संयुक्त रूप से भागीदार हों।''

प्लेटो का इस ग्रन्थ की रचना का दूसरा उद्देश्य तत्कालीन एथेन्स के प्रजतन्त्र में प्रचलित लॉटरी द्वारा नियुक्ति की व्यवस्था का अन्त करना था। इस व्यवस्था के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक पद के लिए योग्य माना या समझा जाता था। यशेग्यता और दक्षता के लिए घातक इस प्रथा ने एथेन्स के तत्कालीन प्रजातन्त्र को अयोग्य और मूर्ख व्यक्तियों के हाथों में सौंप दिया था। अत: प्लेटों के शासन संचालन को एक कला सिद्ध करते हुए उसके लिए प्रशिक्षण आवश्यक बताया जिसमें प्रशिक्षित व्यक्ति ही शासकों के रूप में कार्य करें। इसके लिए उसने एक ऐसे शासनतन्त्र का निर्माण किया जिसमें स्वार्थपरक के स्थान पर सर्वोदय का भाव हो, परस्पर फूट की जगह एकता हो तथा अनुभवहीन शासकों की अकुशलता के स्थान पर क्षमता और योग्यता का शासन हो। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए 'रिपब्लिक' में जिन दो साधनों के प्रयोग पर जोर दिया गया है, वे हैं-विशेषीकरण (Specialization) तथा एकीकरण (Unification)।

रिपब्लिक की रचना करने का प्लेटों का तीसर उद्देश्य 'कुशासन' का अन्त करना था। तत्कालीन यूनानी नगर राज्यों में शासक वर्ग द्वारा शासन शक्ति का प्रयोग खुले आम अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए किया जाता था। अत: उनमें और शासितों में निरन्तर संघर्ष चलता रहता था जिसे **क्रॉमसैन** ने 'वर्ग संघर्ष' के नाम से पुकारा है। इस वर्ग संघर्ष का फल कुशासन के रूप में प्रकट होता था। इसका मुख्य कारण राज्य की तरफ से किसी भी प्रकार की शिक्षा प्रदान किये जाने की व्यवस्था का न होना था। फलस्वरूप अपनी सन्तानों को शिक्षित करने का व्यय माता-पिताओं को स्वयं उठाना पड़ता था। शिक्षा बहुत महँगी थी। अत: शिक्षित होकर वे शासन के माध्यम से व्यय धन पुन: प्राप्त करने की चेष्टा में लगे रहते थे। इस तरह कुशासन निरन्तर बना रहता था। अत: **प्लेटो** शिक्षा और प्रशिक्षण की व्यवस्था राज्य की ओर से स्थापित कर इस दुर्गुण को समाप्त करना चाहता था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि **प्लेटो** का अपने महान ग्रन्थ 'रिपब्लिक' की रचना का मूल उद्देश्य समाज में व्याप्त हिंसक स्वार्थपरता, वर्ग संघर्ष एवं कुशासन जैसे रोगों का उपचार करना और समाज को उनसे मुक्त कर उसे स्वस्थ और आदर्श रूप प्रदान करना था। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसने राजनीतिक शक्ति को नि:स्वार्थ और जनहित की भावनाओं से पूर्ण व्यक्तियों के हावथों में सौंपने का प्रस्ताव किया जिससे वर्ग-संघर्ष और राजनीतिक स्वार्थपरता का रोग दूर हो जाये। उसका यह विचार उसकी दार्शनिक राजाओं द्वारा शासन की प्रसिद्ध धारणा में अभिव्यक्त हुआ है।